

English



Congratulations! You have chosen one of the finest Research wheat seeds from the Crystal family. Crystal has solid experience in producing high-quality research wheat variety seeds. These seeds are the result of extensive research, aimed at developing high-yielding research wheat variety crops suitable for diverse agricultural climates. Crystal adopts the latest technologies during seed production to ensure that farmers receive seeds of the highest quality. Crystal's Research wheat seeds provide excellent germination & better vigor with tolerant to biotic & abiotic stresses. Kindly adopt the best farming practices to get outstanding yield. The following general recommendations are provided, so we kindly ask you to read these recommendations before making any decisions.

Research wheat variety	4130	4140	4135	SANGRAM	PA 4110
Duration/Rabi	125-130	130-135	125-130	125-130	130-135
Please note that according to local weather conditions, crop growth & maturity may vary.					
General recommendations					
Source of irrigation	Irrigated				
Preparation of Land	The Wheat crop requires a well pulverized but compact seed bed for good uniform germination. One deep ploughing with soil turning plough followed by two harrowing and planking is desirable				
Seed Rate	Timely sown -100 kg/ha & Late sown-125 kg/ha				
Seed treatment	Treat the seed with Thiram supplied along with seed packet				
Spacing in cm	Distance in cm (Plant to plant) Timely sown-20x33 cm & Late sown-15-18 cm				
Fertilizer recommendation					

Recommendation of FYM & chemical fertilizers	Zones	Sowing Conditions	Fertiliser dosage and Time of application		
Use of Farm Yard manure improves the general physical condition and structure of the soil and its capacity to hold water. About 10 to 15 tons of FYM or compost should be applied 4 to 6 weeks before sowing and worked well into the soil	NWPZ-PB,HR,WUP, DL,RJ	Timely sown	150:60:40 Kg NPK /ha	1/3 N and PK at sowing time and 2/3 Nal 1st node stage i.e. 35-40 DAS	
	NEPZ-UJ,BH,EUP, WB,OR,AS	Late sown	120:60:40 Kg NPK /ha	1/3 N and PK at sowing time and 2/3 Nal 1st node stage i.e. 35-40 DAS	
	NH2-UJ,HP,J&K, AR,WB,SK	Timely sown	120:60:40 Kg NPK /ha	1/3 N and PK at sowing time and 2/3 Nal 1st node stage i.e. 35-40 DAS	
	PZ-MH,KA,TG,TN, CZ-MP,GJ,S,RJ, Jhansi Div of (UP)	Late sown	90:60:40 Kg NPK /ha	1/3 N and PK at sowing time and 2/3 Nal 1st node stage i.e. 35-40 DAS	

Intercultivation Weed management is very critical in initial stage of the planted crop, follow proper application methods to control the weeds

Weed Control	Cultural practices such as time and method of sowing, crop density and geometry, crop varieties, dose, method and time of fertilizer application, time and method of irrigation have pronounced effect on crop-weed interference	Type of weeds to be managed	Herbicides recommended	Time of application	Formulation in (gmi ml / Kg/ Ltr) per ha	Dilution in Water (Litres)/ ha
		Grassy Weeds	Sulfosulfuron 75% WG	Post-em.at 30-35 DAS	33.3g/m	200-220 lt
			Isoproturon 75% WP	Post-em.at 30-35 DAS	1.3g	750
		Broad leaves weeds	2,4-D Ethyl Ester 38% EC	Post-em.at 30-35 DAS	1.3x 22.1kg	400-500
			Metsulfuron Methyl 20% WG	Post-em.at 30-35 DAS	20/gm	500-600
		Both Grassy+ Broad leaves Weeds together	Isoproturon 75% WP+2,4-D Ethyl Ester 38% EC	Post-em.at 30-35 DAS	1.3g	750
			Mesosulfuron methyl 3% + Iodosulfuron methyl sodium 0.6% WG	Post-em.at 30-35 DAS	400 ml	400-500

Cultive Irrigation salges	The total water requirement of wheat crop is 450-650 mm, which need to be provided over first 100 days of crop growth uniformly		
	There is the need for 6 irrigations for wheat in general. However, in sandy loam soil 6-8 irrigations may be required whereas in heavy clay soil 3-4 irrigations are considered to be sufficient	Status of Irrigation	Critical Crop Development Stage
		1st Irrigation	At crown root initiation stage
		2nd Irrigation	At tillering stage
		3rd Irrigation	At node formation/late jointing or booting stage
		4th Irrigation	At heading/ flowering stage
		5th Irrigation	At milk formation stage
		6th Irrigation	At grain filling/ dough stage
Approximate date after sowing			
20-25 days			
40-45 days			
60-65 days			
80-85 days			
100-105 days			
115-120 days			

Pest Management	Pest	Control measures
	Termites	Seed treatment with Chlorophyriphos 20 EC @ 4 ml/Kg of seed in Termite infested area.
Disease Management	Rusts	Application of 0.1% solution of Propiconazole 25EC or Tebuconazole 25EC @ 500 ml/ha immediately after the appearance of the diseases
	Kamal Bunt	Spraying Propiconazole at heading stage, although does not eradicate the disease but induces more than 71% control of Kamal Bunt.
	Loose Smut	Carboxin or Carbendazim @ 1.25 g/ha of seed and Tricoderma harzianum @ 2 g/ Kg of seed manages the disease.

For more information to control Pest & disease in field, please consult with local agriculture officers

Harvesting & threshing harvesting should be done when the ears are sufficiently dry and the grain moisture content is around 14 to 20%.

Storage The harvested crop is thereafter threshed and sun dried to a moisture level of around 10-12% for safe storage. Grains should be in galvanized bin and fumigate it with aluminum phosphide@ 01 tablet (3g of each) or EDB@ 3 ml/100 kg of grains

Don't Do Avoid excessive irrigation can cause lodging, fungal diseases and root rot.

Do's light Irrigation at critical growth stages like Crown root initiation , flowering & grain filling Control weeds early using herbicides or manual weeding

Precaution Use quality seeds, follow timely sowing, irrigation and fertilizers applications. Take timely control measures for weeds & pests, and ensure proper harvesting, threshing & grain storage.

Note The above information is a general advisory. For specific recommendations related to particular region, please contact local State Agriculture Department.

Disclaimer Picture included in this pamphlet are only for illustrative purposes

HINDI



बधाई! आपने क्रिस्टल परिवार के सबसे उत्कृष्ट रिसर्च गेहूँ के बीजों में से एक को चुना है. क्रिस्टल उच्च गुणवत्ता युक्त रिसर्च गेहूँ की क्रिसम के बीजों के उत्पादन का मजबूत अनुभव रखता है. इन बीजों को व्यापक शोध द्वारा तैयार किया गया है, जिसका उद्देश्य अधिक उपज देने वाली गेहूँ की फसल की रिसर्च किस्में विकसित करना है जो विभिन्न कृषि जलवायविक स्थितियों के लिए उपयुक्त हों. क्रिस्टल बीज उत्पादन के दौरान नवीनतम तकनीकों का उपयोग कर सुनिश्चित करता है कि किसानों को उच्चतम गुणवत्ता वाले बीज मिलें. क्रिस्टल के रिसर्च गेहूँ के बीज अंकुरण में उत्कृष्ट और ताकत में बेहतर होने के साथ जैविक और अजैविक तनावों के प्रति सहनशील हैं. कृषयों शानदार उपज प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम कृषि पद्धतियों को अपनाएं. निम्नालिखित सामान्य अनुशंसाएँ की गई हैं, इसलिए हम आपसे अनुरोध करते हैं कि कोई भी निर्णय लेने से पहले इन अनुशंसाओं को अवश्य पढ़ें.

रिसर्च गेहूँ की क्रिसम	4130	4140	4135	SANGRAM	PA 4110
अवधि/रबी	125-130	130-135	125-130	125-130	130-135
कृषयों इस बात का ध्यान रखें कि मौसम की स्थिति के अनुसार, फसल की बढावट और परिपक्वता में भिन्नता हो सकती है.					
सामान्य अनुशंसाएँ					
सिंचाई का स्रोत	सिंचित				
जमीन की तैयारी	गेहूँ की फसल के लिए अच्छी तरह से भुरभुरी लेटरन बीज की सघन क्यातियों की आवश्यकता होती है ताकि अच्छी तरह से अंकुरण हो सके। मिट्टी परतने वाले हल से एक गहरी जुताई के बाद दो बार हल देने करना और पाटा लगाना सांघनीय है				
बीज दर	समय पर बुवाई – 100 कि.ग्र./ हेक्टेयर और पछेती बुवाई –125 कि.ग्र./ हेक्टेयर				
बीज उपचार	बीज के पैकेट के साथ दिए गए थिरम से बीज का उपचार करें				
से.मी. में अंतराल	से.मी. में 20 (से.मी. के 8 से 10) समय बुवाई- 20-23 से.मी. छोटी बुवाई- 15-18 से.मी.				
उर्वरक अनुशंसा					

अच्छी तरह से सड़ी खाद और रासायनिक उर्वरकों की अनुशंसा	क्षेत्र	बुवाई की स्थितियाँ	उर्वरकों की मात्रा और प्रयोग का समय		
अच्छी तरह से सूखी खाद या उपचार करने से मिट्टी की सघन घटित होती और सघन और खाद लागू करने में सुवात प्राप्त हो। बुवाई से 4 से 6 सप्ताह पहले लगाने 10 से 15 ल. अच्छी तरह से सूखी खाद से कम्पोस्ट का प्रयोग किया जाना चाहिए और मिट्टी में अच्छी तरह मिला देने चाहिए।	NWPZ-PB,HR,WUP, DL,RJ	समय पर बुवाई	150:60:40 Kg NPK /ha	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	100-110 दिनों के बाद
	NEPZ-UJ,BH,EUP, WB,OR,AS	छोटी बुवाई	120:60:40 Kg NPK /ha	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	100-110 दिनों के बाद
	NH2-UJ,HP,J&K, AR,WB,SK	समय पर बुवाई	120:60:40 Kg NPK /ha	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	100-110 दिनों के बाद
	PZ-MH,KA,TG,TN, CZ-MP,GJ,S,RJ, Jhansi Div of (UP)	छोटी बुवाई	90:60:40 Kg NPK /ha	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	100-110 दिनों के बाद

अंतर-छेती लगाई गई फसल की प्रारंभिक अवस्था में खरपतवारों का प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है। खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए उचित अनुभवों विधियों का पालन करें

खरपतवार नियंत्रण	बुवाई के समय और विधि, फसल के प्रभाव और व्यापक, फसल की क्रिसम, मात्रा, उर्वरक की प्रयोग विधि और समय, सिंचाई का समय और विधि जैसी कृषि पद्धतियों का फसल पर खरपतवार के प्रभाव पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है	खरपतवारों के प्रकार जिनका प्रबंधन किया जाना चाहिए	अनुशंसित शाकनाशी	प्रयोग का समय	प्रति हेक्टेयर (ग्राम/मि.ली./ कि.ग्र./लीटर) में फॉर्म्युलेशन	पानी में घोल (लीटर)/ हेक्टेयर
		घासदार खरपतवार	सल्फोसल्यूरॉन 75% डब्ल्यू.पी	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	33.3 ग्राम	200-220 लीटर
			आइसोप्रोटूरॉन 75% डब्ल्यू.पी	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	1.33 ग्राम	750
		चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार	2,4-डी एथिल एस्टर 38% ईसी	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	1.32-2.2 किग	400-500
			मेटसल्यूरॉन मिथाइल 20% डब्ल्यू.पी	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	20 ग्राम	500-600
		दोनों घासदार + चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार एक साथ	अक्लोमेटरॉन 75% डब्ल्यू.पी+2,4-डी एथिल एस्टर 38% ईसी	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	1.33 ग्राम	750
			मेटसल्यूरॉन मिथाइल 3% + आयोडोसल्यूरॉन मिथाइल सोडियम 0.6% डब्ल्यू.पी	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	400 मिली	400-500

गेहूँ की फसल के लिए पानी की कुल आवश्यकता 450-650 मि.मी. होती है, जिसे फसल की बढावट के पहले 100 दिनों में समान रूप से दिया जाना चाहिए

सिंचाई की महत्वपूर्ण अवस्थाएँ	सामान्य तौर पर गेहूँ की फसल के लिए 6 सिंचाई की आवश्यकता होती है। हालांकि, खेती की टोपट मिट्टी में 6-8 सिंचाई की आवश्यकता हो सकती है, जबकि भारी बिकनी मिट्टी में 3-4 सिंचाई पर्याप्त मानी जाती है।	सिंचाई की स्थिति	महत्वपूर्ण फसल विकास चरण	बुवाई के बाद की अनुमानित तिथि
		पहली सिंचाई	नई जड़ें निकलने की आरंभिक अवस्था	20-25 दिन
		दूसरी सिंचाई	कड़ों निकलने की अवस्था	40-45 दिन
		तीसरी सिंचाई	पोर बनने की अवस्था	60-65 दिन
		चौथी सिंचाई	फूल आने की अवस्था	80-85 दिन
		पाँचवीं सिंचाई	दूध बनने की अवस्था	100-105 दिन
		छठी सिंचाई	अनाज भराई की अवस्था	115-120 दिन

कीट	नियंत्रण उपाय
	कीट प्रबंधन
दीमक	दीमक प्रभाविता क्षेत्र में 4 मि.ली./कि.ग्र. बीज की दर से क्लोरोफाईरीफॉस 20 ईसी से बीज का उपचार करें।
रोग प्रबंधन	रसुआ
	कमल बंट
	लूज स्पट

खेत में कीटों और रोगों को नियंत्रित करने के लिए अधिक जानकारी के लिए, कृषयों स्थानीय कृषि अधिकारियों से परामर्श करें

कटाई और मंडाई बालित्य पर्याप्त रूप से सूख जाने और अनाज में नमी की मात्रा लगभग 14 से 20% हो जाने पर फसल की कटाई की जानी चाहिए।

भंडारण इसके बाद कटी हुई फसल की मंडाई कर उसे सुरक्षित भंडारण के लिए लगभग 10-12% नमी के स्तर तक धूप में सुखाया जाता है। अनाज को गैल्फनाइज्ड बर्लिन में रखना चाहिए और 01 टैबलेट (3-3 ग्राम) की दर से एल्युमिनियम फॉस्फाईड या 3 मि.ली./100 कि.ग्र. अनाज की दर से ड्यूडीडी से घुसल करना चाहिए।

क्या न करें अत्यधिक सिंचाई करने से बचें क्योंकि इससे फसल गिर सकती है, फंफूंद जनित रोग लग सकते हैं और जड़ सड़ सकती है।

क्या करें नई जड़ निकलने, फूल आने और अनाज भराई जैसी बढावट की महत्वपूर्ण अवस्थाओं में हल्की सिंचाई करें। शाकनाशी का उपयोग कर या हाथ से निराई कर खरपतवारों को जल्दी नियंत्रित करें।

सावधानियाँ गुणवत्तायुक्त बीजों का उपयोग करें, समय पर बुवाई, सिंचाई और उर्वरकों का उपयोग करें। खरपतवारों और कीटों को समय पर नियंत्रित करें और उचित कटाई,मंडाई और अनाज भंडारण सुनिश्चित करें।

ध्यान दें उपयुक्त जानकारी एक सामान्य परामर्श है. किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित विशिष्ट सलाह के लिए, कृषयों अपने स्थानीय राज्य कृषि विभाग से संपर्क करें.

अस्वीकरण इस प्रकार पुस्तिका में दिए गए चित्र केवल उदाहरणों हैं

MARATHI



अभिनेंदन! तुम्ही क्रिस्टल संरंथेधणील एक उत्कृष्ट संशोधन असलेले गव्हाचे बियाणे निवडले आहे. क्रिस्टलला गव्हाच्या जातीचे संशोधन करून उच्च-गुणवत्तेची बियाणे तयार करण्याचा ठोस अनुभव आहे. हे बियाणे म्हणजेच विविध कृषी हवामानातध्ये गव्हाच्या जातीचे उपयुक्त पीक उत्पादित करण्याच्या उद्देशाने केलेल्या विस्तृत संशोधनाचे परिणाम आहेत. शेतकऱ्यांना उच्च दर्जाचे बियाणे मिळावे यासाठी क्रिस्टल बीजोत्पादनादरम्यान अस्थापुनिक संंत्रज्ञानाचा अवलंब करतात. क्रिस्टल रिसर्च गव्हाच्या बियाणांसाठी उत्कृष्ट उगवण तसेच जैविक आणि अजैविक प्रतिबल सहन करण्यास उत्तम ताकद देतात उत्कृष्ट उत्पादन मिळविण्यासाठी सर्वोत्तम शेती पद्धतीचा अवलंब करावा. खाली सर्वसाधारण सल्ले दिले आहेत, म्हणूनच आम्ही तुम्हाला कोणतेही निर्णय घेण्यापूर्वी सल्ले घ्यावण्यास सांगत आहोत.

गव्हाच्या विविधतेचे संशोधन	4130	4140	4135	SANGRAM	PA 4110
कालावधी/रबी	125-130	130-135	125-130	125-130	130-135
कृषया लक्षात घ्या की स्थानिक हवामानानुसार, पीक वाढ आणि परिपक्वता बदलू शकतात.					
सर्वसाधारण सल्ले					
सिंचनाचा स्रोत	सिंचन				
जमिनीची तयारी	गाहू पिकाता चांगल्या एकसमान उगवणीसाठी चांगले कुळवणी केलेले परंतु दाट बियाणे बाफा आवश्यक असते. माती फिरवण्याच्या माग्यारसह एक खोल नांगणी आणि त्यानंतर दोन सदां आणि पाट करणे योग्य असते				
बियाण्याचा दर	वेळेवर पेरणी – 100 kg/हेक्टर आणि उशिरा पेरणी – 125 kg/हेक्टर				
बियाण्याची प्रक्रिया	बियाणे पाकिटासह पुरवठा केलेल्या थिरामने बीजप्रक्रिया करा				
से.मी. मध्ये अंतराल	से.मी. मध्ये 20 (से.मी. के 8-10) से.मी. मध्ये 20-23 से.मी. छोटी बुवाई- 15-18 से.मी.				
योग्य खताचा सल्ला					

शेजखत आणि रासायनिक खत वापराचे सल्ले	शेतजमीन	पेरणीच्या स्थिती	खताची मात्रा आणि वापरण्याची वेळ		
शेजखताचा वापर केवळ जैविकी सघन संपन्न स्थिती रचना आणि पणी सघन वेळापची सल्ला घ्यावे. सुमारे 10 से.15 तर शेजखत किंग केवळ पेरणीपूर्वी 4 से.6 आठवे आणि टाकवे आणि जमिनी घातेने मिळावे	NWPZ-PB,HR,WUP, DL,RJ	वेळेवर पेरणी	150:60:40 Kg NPK /ha	पेरणीच्या वेळी 1/3 N आणि P+K आणि 2/3 N चिह्ना सघन त्या लागूने 35-40 DAS	
	NEPZ-UJ,BH,EUP, WB,OR,AS	उशिरा पेरणी	120:60:40 Kg NPK /ha	पेरणीच्या वेळी 1/3 N आणि P+K आणि 2/3 N चिह्ना सघन त्या लागूने 35-40 DAS	
	NH2-UJ,HP,J&K, AR,WB,SK	वेळेवर पेरणी	120:60:40 Kg NPK /ha	पेरणीच्या वेळी 1/3 N आणि P+K आणि 2/3 N चिह्ना सघन त्या लागूने 35-40 DAS	
	PZ-MH,KA,TG,TN, CZ-MP,GJ,S,RJ, Jhansi Div of (UP)	उशिरा पेरणी	90:60:40 Kg NPK /ha	पेरणीच्या वेळी 1/3 N आणि P+K आणि 2/3 N चिह्ना सघन त्या लागूने 35-40 DAS	

आंतरमशागत लागवड केलेल्या पिकाच्या अंकुर फुटण्याच्या टप्प्यावर तणाचे नियंत्रण करणे अवलंब महत्वाचे असते. तणांच्या नियंत्रणासाठी योग्य वापरण्या पद्धतीचा अवलंब करावा

तण नियंत्रण	पेरणीची वेळ आणि पद्धत, पीक दाटपणा आणि आकार, पीक जात, डोस, खत वापरण्याची पद्धत आणि वेळ, सिंचनाची वेळ आणि पद्धत यासारख्या बाबरीक पद्धतींची पीक-तण नियंत्रणावर अधिक प्रभाव पडतो.	वेगवेगळ्या तणांचे नियंत्रण	अनुशंसित शाकनाशी	प्रयोग का समय	प्रति हेक्टेयर (ग्राम/मि.ली./ कि.ग्र./लीटर) में फॉर्म्युलेशन	पानी में घोल (लीटर)/ हेक्टेयर
		गवताळ तण	सल्फोसल्यूरॉन 75% WG	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	33.3 ग्रॅम	200-220 लीटर
			आयसोप्रोटूरॉन 75% WP	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	1.33 ग्रॅम	750
		चंद पानांचे तण	2,4-डी इथाइल एस्टर 38% EC	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	1.32-2.2 किग	400-500
			मेट्सल्यूरॉन मिथाइल 20% WG	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	20 ग्रॅम	500-600
		दोन्ही गवताळ + चंद पाने असलेले तण एकत्र	अक्लोमेटरॉन 75% डब्ल्यू.पी+2,4-डी इथाइल एस्टर 38% EC	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	1.33 ग्रॅम	750
			मेट्सल्यूरॉन मिथाइल 3% + आयोडोसल्यूरॉन मिथाइल सोडियम 0.6% WG	बुवाई से 30-35 दिनों के बाद	400 मिली	400-500

सिंचनाचे महत्वाचे टप्पे	गाहू पिकाची एकूण पण्याची गरज 450-650 मिमी आहे, जी पिकाच्या वाढीच्या पहिल्या 100 दिवसांत एकसमान रीतीने पुरवली जाणे आवश्यक आहे.		
	गव्हासाठी सर्वसाधारणपणे 6 सिंचनाची गरज आहे। तथापि, हलका जमिनीत 6-8 सिंचनाची आवश्यकता असू शकते, तर भारी विकसमानाच्या जमिनीत 3-4 सिंचन पुरेसे मानले जाऊ शकते.	सिंचन टप्पे	पीक विकासाची गंभीर अवस्था
		पहिले सिंचन	मुकुटबद्ध फुटण्याचा टप्पा
		2२ सिंचन	मशातीच्या टप्प्यावर
		३२ सिंचन	कांडी घटण्याचा टप्पा
		4थे सिंचन	फुलोरा/ फुले येण्याचा टप्पा
		5थे सिंचन	बीक भरण्याचा टप्पा
		6थे सिंचन	दाणे भरण्याचा/ लोंबी तयार होण्याचा टप्पा
अंदाजे 115-120 दिवस			

कीटक नियंत्रण	कीट	नियंत्रण उपाय
---------------	-----	---------------

GUJARATI



અભિનંદન! તમે ફિટલ પરિવારના સર્વોત્તમ સંશોધિત ઘઉંના બિયારણ માંથી એક પસંદ કર્યા છે. ફિટલ ઉચ્ચ ગુણવત્તાના સંશોધિત ઘઉંના બિયારણની વેરાયટી ઉત્પાદનનો બહોળો અનુભવ ધરાવે છે. આ બિયારણ વ્યાપક સંશોધનનું પરિણામ છે, જેનો હેતુ વધુ ઉપજ આપતા ઘઉંના પાકની સંશોધિત વેરાયટી વિકસાવવાનો છે, જે વિભિન્ન ખેતી આબોહવા માટે અનુકૂળ બની રહે. બિયારણ ઉત્પાદન દરમિયાન ફિટલ અદ્યતન ટેકનોલોજીનો ઉપયોગ કરે છે જેથી બેક્ટેરિયો સર્વોચ્ચ ગુણવત્તાના બિયારણ મેળવે તે સુનિશ્ચિત કરી શકાય. ફિટલના સંશોધિત ઘઉંના બિયારણ અંકુરણમાં ઉત્કૃષ્ટ અને તાકાતમાં વધુ સારા હોવા સાથે જૈવિક અને અજૈવિક તાણ પ્રત્યે સહનશીલ પણ છે.

કૃપા કરી બેન્ફોડ ઉપજ મેળવવા ખેતીની શ્રેષ્ઠ પદ્ધતિઓ અપનાવો. નીચે જણાવેલ સામાન્ય ભલામણો પૂરી પાડવામાં આવી છે, એટલે કોઈપણ નિર્ણય કરતા પહેલાં અને તમને આ ભલામણો વાંચી લેવા નિવેદન કરીએ છીએ.

ઘઉંની સંશોધિત કોડી વેરાયટી	4130	4140	4135	સંગ્રામ	PA 4110		
અવધિ/રવિ	125-130	130-135	125-130	125-130	130-135		
કૃપા કરી નોંધ લેશો કે સ્થાનિક આબોહવા સ્થિતિઓ અનુસાર, પાક વૃદ્ધિ અને પરિપક્વતા અલગ હોઈ શકે છે.							
સામાન્ય ભલામણો							
સિંચાઈનો સ્રોત	સિંચિત						
જમીન તૈયાર કરવી	ઘઉંના પાક માટે સારી રીતે પીસેલ પરંતુ બીજની સઘન ક્ષારિયો જરૂરી હોય છે, જેથી સારું અને એકસમાન અંકુરણ થઈ શકે. માટી ઉલેચતા હળ સાથે એક ઊંડું ખેડાણ કર્યા પછી બે વાર હેરો કરવું અને પ્લાકિંગ ઈપ્થનીય છે.						
બીજની માત્રા	સમયસર વાવણી- 100 કિગ્રા /હૃ. અને વિલંબિત વાવણી- 125 કિગ્રા /હૃ.						
બીજ સારવાર	બીજને થાયરામથી સારવાર કરો જે બીજના પકેટ સાથે પૂરું પાડવામાં આવે છે.						
અંતર રેખી. માં	અંતર રેખ. માં (કેડ મી કોડ) સમસ વચ્ચે: 10-20 સેમી. અને વિભિન્ન વચ્ચે 15-20 સેમી.						
ભલામણ કરતા ખાતર							
એફવાયએમ અને રાસાયણિક ખાતરોની ભલામણ							
	ક્ષેત્ર	વાવણીની સ્થિતિઓ	ખાતરની માત્રા અને વપરાશનો સમય				
ખેડના ખાતરો ઉપયોગ કરવાથી મટીતી સમાન્ય નોંધિ સિદ્ધિ અને સંરચનામાં સુધારો થવા સહી વાણી ચોખવાની ટેની ક્ષતિ પણ વધે છે. વાવણીના 4 થી 6 અઢવાલિકા પહેલાં આશરે 10 થી 15 ટન મેયુનકલરે અથવા કમ્પોસ્ટ વાપરવું મોંઘેરું અને મટીતી સારી રીતે ભેળવી દો.	NWPZ-FB, HP, WP, DL, RJ	સમસ વાવણી કોડ	150:60:40 Kg NPK /ha	1/3 સેન અને બેન્ફે વાવણી સમયે 1/3 સેન 100 માંડ સેનર થવાની અવસ્થા એટલે કે 15-40 ડીસેમ્બર વા.			
	NEPZ, JK, BH, EUP, WH, OR, AS	વિભિન્ન વાવણી કોડ	120:60:40 Kg NPK /ha	1/3 સેન અને બેન્ફે વાવણી સમયે 1/3 સેન 100 માંડ સેનર થવાની અવસ્થા એટલે કે 15-40 ડીસેમ્બર વા.			
	NH2, JK, MP, JK, AR, WB, SK	સમસ વાવણી કોડ	120:60:40 Kg NPK /ha	1/3 સેન અને બેન્ફે વાવણી સમયે 1/3 સેન 100 માંડ સેનર થવાની અવસ્થા એટલે કે 15-40 ડીસેમ્બર વા.			
	PZ, MH, KA, TG, TN, CZ, MP, GJ, S, RJ, Jharkhand Div of (UP)	વિભિન્ન વાવણી કોડ	90:60:40 Kg NPK /ha	1/3 સેન અને બેન્ફે વાવણી સમયે 1/3 સેન 100 માંડ સેનર થવાની અવસ્થા એટલે કે 15-40 ડીસેમ્બર વા.			
આંતર-ખેતી	વાવણી કરેલ પાકની પ્રારંભિક અવસ્થામાં નિંદામણનું પ્રબંધન મૂળ જ મહત્વનું છે. નિંદામણનું નિયંત્રણ કરવા ચોચ્ય વપરાશ પદ્ધતિઓ અનુસરો.						
નિંદામણ નિયંત્રણ	ખેતીની પદ્ધતિઓ જેમ કે વાવણીનો સમય અને રીત, પાકની ઘનતા અને ભૌગોલિક સ્થિતિ, પાકની વેરાયટીઓ, ખાતરની માત્રા, વપરાશની રીત અને સમય, સિંચાઈના સમય અને પદ્ધતિની પાક-નિંદામણ કરવે થતી પરસ્પર ક્રિયા પર ઊંડી અસર થાય છે.	પ્રબંધન કરવાના રહેતા નિંદામણનો પ્રકાર	ભલામણ કરાતા નિંદામણનાશક	વપરાશનો સમય	સંયોજન (ગ્રા/મિલી/કિગ્રા/લીટર) માં પ્રતિ હેક્ટર	પાણીમાં કુલ (લીટર/હૃ)	
		ઘાસના નિંદામણો	સલ્ફોસલ્ફ્યુરોન 75% ડબલ્યુજી	ભૂજીન 10 ગ્રાંડ/લિટર્/હિસ્ટામવા	33.3 ગ્રામ	100-120 લીટર	
	સલ્ફોસલ્ફ્યુરોન 75% ડબલ્યુજી		ભૂજીન 10 ગ્રાંડ/લિટર્/હિસ્ટામવા	1.33 ગ્રામ	750		
	પહોળા પાનનાં નિંદામણો	2,4-ડી એથિલ ઈસ્ટર 38% ઈસી	ભૂજીન 10 ગ્રાંડ/લિટર્/હિસ્ટામવા	1.12-1.1 કિગ્રા	400-500		
		મેટાસલ્ફ્યુરોન મીથાઈલ 20% ડબલ્યુજી	ભૂજીન 10 ગ્રાંડ/લિટર્/હિસ્ટામવા	20 ગ્રામ	500-600		
	ઘાસના + પહોળા પાનનાં બંને નિંદામણો સાથે	અલોપેથોલેક્યુમેન 75% ડબલ્યુએ+1,4-ડી ઈપીલ ઈસ્ટર 38% ઈસી	ભૂજીન 10 ગ્રાંડ/લિટર્/હિસ્ટામવા	1.33 ગ્રામ	750		
		મીસોસલ્ફ્યુરોન મીથાઈલ 3%+ આયોડોસલ્ફ્યુરોન મીથાઈલ સોલિડમ 0.6% ડબલ્યુજી			ભૂજીન 10 ગ્રાંડ/લિટર્/હિસ્ટામવા	400 મિલી	400-500
	ઘઉંના પાક માટે પાણીની કુલ જરૂરિયાત 450-650 મિમી. છે, જે પાકની વૃદ્ધિના શરૂઆતના 100 દિવસો દરમિયાન સમાન રીતે પૂરી પાડવી જરૂરી બને છે.						
	સિંચાઈની અવસ્થાઓ	ઘઉં માટે સામાન્યતા: 6 સિંચાઈની જરૂર રહે છે. જો કે, તેનામુ લોખ મટીતમાં 6-8 સિંચાઈની જરૂર પડી શકે છે જ્યારે ભાટે ચીકણી માટીમાં 3-4 સિંચાઈ પૂરતી માનવામાં આવે છે.	સિંચાઈની સ્થિતિ	પાકના વિકાસની મહત્વની અવસ્થા	વાવણી પછી અંદાજિત તારીખ		
1લી સિંચાઈ			નવા મૂળ આવવાની અવસ્થામાં	20-25 દિવસ			
2જી સિંચાઈ			રિલેટિંગ અવસ્થામાં	40-45 દિવસ			
3જી સિંચાઈ			ગ્રાંડ સ્થાય થવા /ગ્રાંડ મોડે આવવા અથવા બૂંટા અવસ્થામાં	60-65 દિવસ			
4થી સિંચાઈ			ફેડિંગ / કૂલ આવવાની અવસ્થામાં	80-85 દિવસ			
5મી સિંચાઈ			દૂધ તૈયાર થવાની અવસ્થા	100-105 દિવસ			
6ઠ્ઠી સિંચાઈ			દાણાં ભરાવા / કણકની અવસ્થા	115-120 દિવસ			
જીવાત પ્રબંધન	જીવાત	નિયંત્રણના ઉપાયો					
રોગ પ્રબંધન	ઉઘઈ	ઉઘઈનો ઉપદ્રવ ધરાવતા વિસ્તારમાં કસોટીપાલિકોસ 20 ઈસી ની 4 મિલી માત્રા પ્રતિ કિલો બી માત્રામાં લઈ બી સારવાર કરો.					
	સૂકારો	રોગ દેખાત કે તરત જ પ્રોપાક્સોએકોલ 15 ઈસી અથવા ટેમ્બુએકોલ 150 ઈસી ના 0.1% સોલ્યુશનને 500 મિલી પ્રતિ હેક્ટર માત્રામાં વાપરો.					
	કમલ બબ્બટ	હોડિંગ અવસ્થામાં પ્રોપાક્સોએકોલનો ઉપક્રવ જો કે રોગને દૂર થઈ કરતો પણ કમલ બબ્બટના 715થી વધુ પર નિયંત્રણ મેળવે છે.					
લણણી અને છાણણી	લૂચ સ્મટ	કાર્બેન્ડિમિન અથવા કાર્બેન્ડિમિન 1.5 ગ્રા / હૃ. બી માત્રામાં અને ટ્રાન્કોડોન હોસ્પિટેન 2 ગ્રા/કિગ્રા બી માત્રામાં રોગનું પ્રબંધન કરે છે.					
	ખેતરમાં જીવાત અને રોગના નિયંત્રણ વિશે વધુ માહિતી માટે કૃપા કરી સ્થાનિક ખેતી અધિકારીઓ સાથે વાત કરો.						
	સંગ્રહ	લણણી કરેલા પાકને ત્યારબાદ છાણીને તડકામાં સૂકવવામાં આવે છે જેથી સુરક્ષિત સંગ્રહ માટે ભેજનું પ્રમાણ 10-12% જળવાઈ રહે. દાણાંને ગેલ્વેનાઈઝ ડબ્બામાં રાખીને એલ્યુમિનિયમ ફોસ્ફાઈડની 01 ગોળી (દરેક 3 ગ્રામની) અથવા ઇડીબી ની 100 કિગ્રા દાણાં દીઠ 3 મિલી. માત્રામાં ધૂણી કરવી જોઈએ.					
ન કરો	વધુ પડતી સિંચાઈ ટાળો, આમ કરવાથી ભરાવો, કૂચજન્ય રોગો અને મૂળનો સડો થઈ શકે છે.						
કરો	વિકાસની મહત્વની અવસ્થાઓ જેમ કે મૂળ આવવા, કૂલ આવવા અને દાણાં ભરાવવા વખતે હળવી સિંચાઈ કરો. નિંદામણનાશકોનો ઉપયોગ કરીને અથવા હાથેની નિંદામણ ચૂંટીને નિંદામણ નિયંત્રિત કરો.						
સાવચેતી	ગુણવત્તા ચુકત બિયારણનો ઉપયોગ કરો, સમયસર વાવણી, સિંચાઈ અને ખાતરોનો વપરાશ કરો. નિંદામણ અને જીવાતો પર નિયંત્રણ મેળવવા સમયોચિત ઉપાયો કરો, અને ચોચ્ય લણણી, છાણી તેમ જ દાણાંનો સંગ્રહ સુનિશ્ચિત કરો.						
નોંધ	ઉપર આપેલી માહિતી સામાન્ય સલાહરૂપ છે. જે તે સેઝને લગતી વિશિષ્ટ ભલામણો માટે કૃપા કરી સ્થાનિક રાજ્ય કૃષિ વિભાગનો સંપર્ક કરો.						
અસ્વીકાર	આ પત્રકમાં સામેલ કરાયેલ ચિત્ર માત્ર દર્શાવતા હેતુસર છે.						